## शोध सारांश

उत्तर उपनिवेशवाद पद का प्रयोग, उपनिवेशवाद के बाद उभरने वाली प्रवृत्ति और समय के लिए किया गया है । यह वह दौर है जब उपनिवेशित देश अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे एवं इस क्रम में उनके द्वारा स्वत्व के संधान का एक दौर चल रहा था। कहने को तो इसका जन्म अमेरिकी अकादमी में हुआ किन्तु शीघ्र ही इसने मुक्ति की सैद्धांतिकी के रूप में तीसरी दुनिया के देशों में प्रसिद्धि पाई।

उत्तर औपनिवेशिक सैद्धांतिकी 1980 के दशक में एडवर्ड सईद, गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक तथा भाभा आदि के चिंतन में उभरकर आई। इसके आने के बाद इसके चिंतन तथा मूल्यांकन के प्रतिमान विकसित हुए तथा लगभग सभी उपनिवेशित देशों ने अपने भाषा, साहित्य, संस्कृति के अनुसंधान में इस सैद्धांतिकी या विमर्श को अपनाया।

डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी के ऐसे आलोचक हैं जिंहोने उपनिवेशवाद विरोध को अपने चिंतन का प्रस्थानबिन्दु बनाया । डॉ. शर्मा भारतीय भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास की खोज करते हुए जिस पद्धति का अनुसरण करते हैं वह आश्चर्यजनक रूप से उत्तर औपनिवेशिक सैद्धांतिकी से बहुत मेल खाता है। डॉ. शर्मा अपने दृष्टिकोण के विकास में मार्क्सवाद को ग्रहण करते हैं और इसका प्रभाव उनके उत्तर उपनिवेशवादी चिंतन पर भी दिखाई देता है।

डॉ. शर्मा के मत में उपनिवेशवाद ने एक सोची समझी रणनीति के तहत उपनिवेशित देशों की भाषा संस्कृति इतिहास आदि का विनाश किया। भाषा चिंतन के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए उन्होंने यह तर्क रखा कि भाषाओं की उत्पत्ति और विकास से

लेकर उनके निर्माण और सम्बन्धों तक जितने भी मत पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने रखे हैं वे अनिवार्य रूप से औपनिवेशिक सम्बन्धों से प्रभवित हैं। डॉ. शर्मा के मत से भारत सिर्फ भाषा तत्वों के आयात का केंद्र नहीं रहा बल्कि इस देश की भाषाओं की कई सारी विशेषताएँ यूरोपीय भाषाओं ने भी ग्रहण की हैं। ये विशेषताएँ ध्वनिगत एवं शब्द भंडार दोनों के धरातल पर हैं।

डॉ. शर्मा भाषा संबंधी चिंतन में इस तथ्य की पहचान करते हैं कि भारतीय भाषाओं के विकास का वर्णन जिस रूप में किया गया है वह उस रूप में है नहीं। वे परस्पर संघर्ष और विजेता-विजित सम्बन्धों पर आधारित नहीं हैं बल्कि उनमें परस्पर संपर्क तथा आदान-प्रदान की एक लंबी शृंखला रही है जिससे भारतीय भाषाएँ काफी लाभान्वित और समृद्ध हुई हैं। भारतीय भाषाएँ कई परिवारों की हैं लेकिन उन सबका उद्भव स्थान भारत से बाहर नहीं है द्रविड़ और नागकुलों की भाषाएँ तो भारत की ही हैं। भारोपीय परिवार की उत्पत्ति की कल्पना जो भारत से बाहर यूरोपीय क्षेत्रों में की गयी है उसका कारण भारत में अपनी वैधता साबित करना, भारतीयों से अपने को श्रेष्ठ साबित करना रहा।

डॉ. शर्मा भाषा को समाजसापेक्ष मानते हैं तथा उसका अध्ययन पृथक रूप से न करके समाज के विकास से जोड़कर करते हैं। भाषा की उत्पत्ति में वे भौतिक कारणों को प्रधान मानते हैं। उनके मत से मनुष्य की भाषा का विकास किसी विशिष्ट बुद्धि के कारण नहीं होता वह भी अन्य प्राणियों की तरह अपनी मूलभूत जरूरतों से ही इसकी शुरुआत करता है फर्क इतना है कि उसके उच्चारणोंपयोगी अंग अधिक विकसित होने के कारण वह इसके श्रेष्ठतम रूप को प्राप्त कर लेता है।

डॉ. शर्मा अंधराष्ट्रवादी किस्म के चिंतक नहीं थे । वे भाषाओं के अध्ययन में भावनाओं और कल्पनाओं को कम, तथ्यों और तर्कों को ज्यादा महत्व देते हैं और इसी के आधार पर अपने मत प्रतिपादित करते हैं। यदि उन्होंने नस्लवादी सिद्धान्त का खंडन किया है तो उसमें पुरातात्विक साक्ष्यों, आधुनिक नृतत्वविज्ञानियों के अध्ययन के निष्कर्षों का प्रयोग करते हुए ही किया है। उनके मत में कोई आर्य या द्रविड़ जैसी विशुद्ध नस्ल नहीं है न ही उनकी कोई परिभाषा ही। भाषाओं का विकास भी किसी आर्य या द्रविड़ जैसी नस्ल के आधार पर नहीं हुआ बल्कि एक ही भाषाएँ कई प्रजातियों या नस्लों के लोग बोलते हैं।

डॉ. शर्मा हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के कहीं ज्यादा संपर्क भाषा के रूप में व्यवहार में देखना चाहते हैं। हिन्दी में वह शक्ति है जिससे राष्ट्रभाषा तो वह स्वयं बन ही जाएगी। हिन्दी को वे केंद्रीय राजकाज में अंग्रेजी के स्थान पर देखना चाहते हैं। साथ ही भारत की अन्य भाषाओं को भी वे राज्यों के प्रशासन में प्रयुक्त होते देखना चाहते हैं। हिन्दी को ही भारत की एकमात्र राजभाषा बनाने को लेकर उनके मत में कोई कट्टरता नहीं है। वे सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध होते देखना चाहते हैं।

भारतीय भाषाओं का विकास संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और फिर उससे आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म, इस क्रम में न होकर लोकबोलियों से हुआ है। हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के कई सारे तत्व उनमें पाये जाते हैं अतः हिन्दी आदि भाषाएँ संस्कृत की पुत्रियाँ नहीं हैं, बल्कि वे प्राचीन लोकभाषाओं के रूप हैं। विभिन्न प्रमाणों के आधार पर उन्होंने यह साबित किया है कि आधुनिक भाषाओं के कई सारे तत्त्व प्राचीन लोक बोलियों में थे।

डॉ. शर्मा ने हिन्दी उर्दू विवाद को साम्राज्यवादी शक्तियों की सोची-समझी साजिश माना है जिसका मूल उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता पर कुठाराघात करना था । उनके मत में  ये दोनों नितांत भिन्न भाषाएँ नहीं है न ही इनका उद्भव किसी मजहबी सीमाओं में हुआ है यह अपने समय की आवश्यकता से उपजी भाषा है और शुरुआती दौर में एक जैसी ही थी किन्तु साम्राज्यवादियों तथा सांप्रदायिकों के चलते यह दो जुदा भाषाएँ बन गयी ।

इस प्रकार डॉ. शर्मा भाषा चिंतन को अपनिवेशिक दायरे से बाहर लाने की पुरजोर कोशिश करते हैं ।

## Research Summary

The term post colonialism used to point out the conditions and time after colonialism. It's such a period when the many colonized countries got own freedom and trying to came out from the impact of colonization, in this sequence they are looking for own Identity. In simply we called that it comes out from American academy but by his noble nature its soonly spread in third world countries as a philosophy of freedom.

Post-colonial theory developed near about 1980, in the thinking of Edward Said, Gayatri Chakravarty Spivak and Homi k. Bhabha. After founding of this theory the parameters of thinking and evaluating are also developed and the maximum Third world countries used this theory in search of own language, literature and culture.

Dr. Sharma is such of criticiser of Hindi who made the colonial protest to his criticism canon . In search of Indian language, culture, literature and history which method he followed, is match to post colonialism. In the development of his critique canon he takes much from Marxism and its impact shows in his post colonial thinking.

In the view of Dr. Sharma, colonizers ruined colonized languages, culture and history in a planned way. In the context of language thinking he argued that the origin of language and through the development of it to the construction; every place western thinkers were effected with colonial relationships. In the view of Dr. Sharma India is not such type of country who is only importer language content instead of it India is a such type of country who export many languages and which characteristics shows upon European languages. These characteristics are on both level first is phoneme and other one is word stock level.

Dr. Sharma in his thinking find out that in the development of Indian language is not right what taught to us. They are not interconnected with the relationship defeater and defeated. They are connected with a rich prosperous chain of correlation and by whom they enriched.

Indian languages are from many different families but how it is possible that the origin of everyone is out of India. At least the language of Dravid and naagkul are of Indian origin. The reason to say the origin of Indo-European outside from India and Asia is that they can prove themselves valid and superior to the Indian.

Dr. Sharma thinks that languages is related with society and the study of language are also done in the context of society. In his view the origin of language is mainly based upon physical factors. It is not the result of any special mental ability of man. He states that like other creatures language of human also came out from his basic needs. The difference is that human vocal organs are more suitable so they got a good form.

Dr. Sharma was not rood nationalist thinker in study of languages. He does not go with emotion or imagination, he made his views based on facts and logic. He refused the racial theories in presence of Anthropological and archeological facts. In his view there is no any pure race like arya and dravid and they could not be properly defined. The development of language is not the result of any Arya and Dravid race.

Dr. Sharma want to see Hindi as communication language instead of national language. In his view Hindi has too much strength by whom it will become the national language itself. He wants to see Hindi at the place of English official language and with it he also want to see that all Indian language should be used in state offices. He has no any kind of view that Hindi is only one official language

of central and state government. He wants to see every Indian language prosperous.

In the development of Indian languages he does not follow the sequence made by colonizers like as; Sanskrit then Prakrit, Apbhransh etc. in his view Indian language comes from popular local language. So Hindi and other Indian language are not the daughter of Sanskrit.

Dr. Sharma thinks that the dispute between Hindi and Urdu are well planed conspiracy of imperialist powers. Its main aim to broke down the unity and integrity.

Dr. Sharma fought these impact of imperialism.